INTELLIGENTSIA
International Journal of Multidisciplinary Research
ISSN: 3108-0766 (Online)
Volume (2), Issue (2)
April - June, 2026
Intelligentsia International Journal Of Multidisciplinary Research

# झारखण्ड के महली जनजाति समुदाय की सामाजिक स्थिति: एक विश्लेषणात्मक अध्ययन

**सुदामा कुमार महतो**
शोध छात्र
स्नातकोत्तर राजनीति विज्ञान विभाग
बिनोद बिहारी महतो कोयलांचल विश्वविद्यालय, धनबाद (झारखण्ड)

***शोध सार***

*झारखण्ड की समृद्ध जनजातीय विरासत में महली (महाली) जनजाति एक विशिष्ट शिल्पी समुदाय के रूप में जानी जाती है। मुख्य रूप से बाँस शिल्प- टोकरी, सूप, चटाई, पंखा, झाड़ू एवं अन्य घरेलू उपयोगी वस्तुएँ पर निर्भर यह अनुसूचित जनजाति झारखण्ड, ओडिशा एवं पश्चिम बंगाल में फैली हुई है। 2011 की जनगणना के अनुसार झारखण्ड में इनकी जनसंख्या लगभग 1,52,663 थी। ऐतिहासिक रूप से बाँस कारीगरी ने ग्रामीण अर्थव्यवस्था में इनका योगदान सुनिश्चित किया, किन्तु प्लास्टिक उत्पादों के प्रसार, कच्चे माल की उपलब्धता में कमी, बिचौलियों द्वारा शोषण एवं बाज़ार पहुँच की कमी के कारण आर्थिक स्थिति कमजोर हुई है। परिवार के सभी सदस्य इस कार्य में संलग्न रहते हैं, फिर भी दैनिक आय प्रायः बहुत कम रहती है। सामाजिक स्तर पर महली समुदाय को अक्सर अन्य जनजातियों की तुलना में अपेक्षाकृत निम्न स्थान प्राप्त माना जाता है। शिक्षा का स्तर धीरे-धीरे सुधर रहा है, पर साक्षरता दर अभी भी राष्ट्रीय एवं राज्य औसत से काफी नीचे है। स्वास्थ्य सुविधाओं, स्वच्छता एवं रोजगार सुरक्षा की चुनौतियाँ बनी हुई हैं। लैंगिक दृष्टि से महिलाएँ शिल्प कार्य में सक्रिय भूमिका निभाती हैं, किन्तु शिक्षा एवं निर्णय-प्रक्रिया में असमानताएँ विद्यमान हैं। सरकारी योजनाएँ, कौशल प्रशिक्षण एवं हाल में बाँस शिल्प को भौगोलिक संकेतक टैग मिलने जैसी पहलों से कुछ सकारात्मक परिवर्तन दिखाई दे रहे हैं, फिर भी समग्र सामाजिक-आर्थिक उत्थान अधूरा है। प्रस्तुत अध्ययन द्वितीयक स्रोतों पर आधारित विश्लेषणात्मक प्रयास है। इसमें महली समुदाय की सामाजिक स्थिति, सांस्कृतिक विशेषताएँ, व्यावसायिक परिवर्तन एवं विकास की बाधाओं का मूल्यांकन कर नीतिगत सुझाव दिए गए हैं, ताकि उनकी पारंपरिक कला का संरक्षण एवं समग्र विकास सुनिश्चित हो सके।*

**कुंजी शब्द:** महली जनजाति, बाँस शिल्प, सामाजिक स्थिति, झारखण्ड, जनजातीय विकास

**प्रकाशन समयरेखा:**
**मूल पाण्डुलिपि प्राप्त – 08 अप्रैल, 2026; सहकर्मी समीक्षण पूर्ण – 15 अप्रैल, 2026; संशोधित पाण्डुलिपि प्राप्त – 16 अप्रैल, 2026; स्वीकृत एवं प्रकाशित – 18 अप्रैल, 2026**
**अनुशंसित संदर्भ**
**महतो, एस. के. (2026). झारखण्ड के महली जनजाति समुदाय की सामाजिक स्थिति: एक विश्लेषणात्मक अध्ययन. इंटेलिजेंटसिया इंटरनेशनल जर्नल ऑफ मल्टीडिसिप्लिनरी रिसर्च, 2(2), 33 –38.**

## अध्ययन की पृष्ठभूमि

झारखण्ड राज्य अपनी प्राचीन जनजातीय परंपराओं, समृद्ध सांस्कृतिक विरासत और विविध शिल्प कौशलों के लिए देश में विशिष्ट स्थान रखता है। राज्य की 32 अनुसूचित जनजातियों में महली (महाली) जनजाति एक प्रमुख शिल्पी एवं दस्तकार समुदाय के रूप में जानी जाती है। यह समुदाय मुख्य रूप से बाँस शिल्प से जुड़ा हुआ है और झारखण्ड के अतिरिक्त ओडिशा तथा पश्चिम बंगाल में भी फैला हुआ है। 2011 की जनगणना के अनुसार झारखण्ड में महली जनजाति की जनसंख्या लगभग 1,52,663 थी। ऐतिहासिक दृष्टि से महली समुदाय को पाँच प्रमुख उप-समूहों में विभाजित किया गया है- बाँसफोड़ महली, पातर महली, सुलुन्खी महली, तांती महली और महली-मुंडा। इनमें अधिकांश समूह पीढ़ियों से बाँस से टोकरी, सूप, चटाई, पंखा, झाड़ू, छतरी एवं अन्य दैनिक उपयोग की वस्तुएँ बनाने के कार्य में संलग्न रहे हैं। पारंपरिक ग्रामीण अर्थव्यवस्था में इनकी भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण थी, क्योंकि कृषि कार्यों और घरेलू जीवन के लिए आवश्यक बाँस के उपकरण मुख्यतः इन्हीं के द्वारा निर्मित किए जाते थे **(शोभा, 2022)**[1]। औद्योगिकीकरण, वैश्वीकरण और सस्ते प्लास्टिक तथा धातु के उत्पादों के व्यापक प्रसार ने महली समुदाय की पारंपरिक आजीविका को गंभीर संकट में डाल दिया है। कच्चे माल (बाँस) की उपलब्धता में कमी, बाज़ार तक सीधी पहुँच का अभाव और बिचौलियों द्वारा शोषण के कारण इनकी आर्थिक स्थिति लगातार कमजोर हुई है। आर्थिक तंगी ने शिक्षा, स्वास्थ्य सेवाओं तक पहुँच और सामाजिक प्रतिष्ठा को भी प्रतिकूल रूप से प्रभावित किया है। साक्षरता दर अन्य कई जनजातियों की तुलना में अपेक्षाकृत कम बनी हुई है और सामाजिक-आर्थिक सूचकांक कमजोर हैं। वर्तमान समय में महली जनजाति अपनी पारंपरिक शिल्प-पहचान को बचाए रखने के साथ-साथ आधुनिक आर्थिक मुख्यधारा में समावेश के लिए संघर्ष कर रही है। राज्य के विभिन्न क्षेत्रों राँची, सिंहभूम, संताल परगना, हजारीबाग, धनबाद तथा सीमावर्ती क्षेत्रों में निवास करने वाले इस समुदाय की सामाजिक स्थिति का गहन विश्लेषण आवश्यक हो गया है। प्रस्तुत अध्ययन इन्हीं चुनौतियों, परिवर्तनों और विकास की संभावनाओं की पृष्ठभूमि में महली जनजाति की वर्तमान सामाजिक स्थिति का विश्लेषणात्मक अध्ययन करने का प्रयास करता है, ताकि प्रभावी नीतिगत हस्तक्षेप के आधार तैयार किए जा सकें।

## शोध के उद्देश्य

1. झारखण्ड में महली जनजाति की वर्तमान सामाजिक-सांस्कृतिक स्थिति, जीवन शैली और पारंपरिक व्यवसाय का विश्लेषणात्मक अध्ययन करना।

2. महली समुदाय की सामाजिक-आर्थिक समस्याओं एवं चुनौतियों की पहचान करते हुए उनके सुधार हेतु जारी सरकारी प्रयासों का मूल्यांकन करना और सुझाव देना।

## शोध विधि

प्रस्तुत शोध अध्ययन वर्णनात्मक एवं विश्लेषणात्मक शोध प्रारूप पर आधारित है। यह अध्ययन पूर्णतः द्वितीयक आंकड़ों के संकलन और विश्लेषण द्वारा पूर्ण किया गया है। आंकड़ों के संकलन हेतु भारत की जनगणना रिपोर्ट (2011), झारखण्ड सरकार के जनजातीय कल्याण विभाग की वार्षिक रिपोर्टें,

Copyright © IIJMR 2026, All rights reserved 

मानवविज्ञान सर्वेक्षणों, शोध पत्रिकाओं, जनजातीय अध्ययन पर आधारित प्रामाणिक पुस्तकों तथा विश्वसनीय वेबसाइटों का उपयोग किया गया है। एकत्रित आंकड़ों का गुणात्मक विश्लेषण कर महली समुदाय की सामाजिक स्थिति, साक्षरता दर, लैंगिक संरचना तथा उनके पारंपरिक बाँस शिल्प के संकट का मूल्यांकन किया गया है।

## झारखण्ड की महली जनजाति की सामाजिक स्थिति

महली जनजाति का सामाजिक ढांचा मूल रूप से पितृसत्तात्मक एवं पितृवंशीय है, जिसमें परिवार का प्रमुख पुरुष सदस्य होता है और वंशावली पिता की ओर से चलती है। समाज में गोत्र (किल्ली) प्रथा अत्यंत महत्वपूर्ण है, जिसका मुख्य उद्देश्य वैवाहिक संबंधों को नियंत्रित करना है। समगोत्री विवाह पूर्णतः वर्जित होता है और इसका उल्लंघन सामाजिक अपराध माना जाता है। महली समाज में विवाह के कई रूप प्रचलित हैं, जिनमें 'आंडी विवाह' (व्यवस्थित एवं आयोजित विवाह) को सबसे सम्मानजनक माना जाता है। इसके अतिरिक्त प्रेम विवाह, विधवा विवाह और कभी-कभी सेवा विवाह जैसी प्रथाएँ भी देखने को मिलती हैं **(कुमारी, 2026)**[2]। सामाजिक व्यवस्था को संचालित करने के लिए इनकी अपनी पारंपरिक पंचायत व्यवस्था विद्यमान है, जिसका मुखिया 'मांझी' या 'महतो' कहलाता है। यह व्यवस्था गाँव के आंतरिक विवादों, सामाजिक नियमों के उल्लंघन, पारिवारिक मामलों और सामूहिक निर्णयों का निपटारा करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। धार्मिक दृष्टि से महली समुदाय प्रकृति पूजक है। वे 'बड़ा पहाड़ी' (पर्वत देवता), 'मनसा देवी' और सूर्य देवता 'सुरजही' को अपने प्रमुख देवताओं के रूप में पूजते हैं। सरहुल, करम, सोहराय, बांगरी और नवाखानी इनके प्रमुख पर्व हैं, जो केवल धार्मिक अनुष्ठान नहीं बल्कि सामाजिक एकता, भाईचारे और सांस्कृतिक पहचान को मजबूत करने वाले अवसर भी होते हैं। इन पर्वों के माध्यम से समुदाय अपनी पारंपरिक मान्यताओं, लोकगीतों, नृत्यों और सामूहिक भोजन की परंपरा को जीवित रखता है **(स्वरूप, 2025)**[3]।

सामाजिक गतिशीलता और शिक्षा के दृष्टिकोण से महली समुदाय आज भी झारखण्ड की कई अन्य जनजातियों की तुलना में अपेक्षाकृत पिछड़ा हुआ है। 2011 की जनगणना के अनुसार झारखण्ड में महली जनजाति की कुल जनसंख्या 1,52,663 थी। ये मुख्य रूप से राँची (सबसे अधिक संख्या), पश्चिम सिंहभूम, सरायकेला-खरसावाँ, संताल परगना, हजारीबाग, धनबाद, गुमला, सिमडेगा और लोहरदगा जिलों में केंद्रित हैं। साक्षरता दर लगभग 44.8 प्रतिशत दर्ज की गई, जिसमें पुरुष साक्षरता लगभग 61 प्रतिशत तथा महिला साक्षरता मात्र 39 प्रतिशत के आसपास रही। उच्च शिक्षा तक इनकी पहुँच अभी भी अत्यंत सीमित है। विशेष रूप से बालिकाओं की शिक्षा की स्थिति चिंताजनक बनी हुई है, जिसका सीधा प्रभाव महिलाओं के सामाजिक सशक्तीकरण पर पड़ता है**(बसु, 2006)**[4] । स्वास्थ्य के क्षेत्र में भी चुनौतियाँ स्पष्ट हैं। कुपोषण, मातृ-शिशु स्वास्थ्य सेवाओं तक सीमित पहुँच, स्वच्छता की कमी और स्वास्थ्य जागरूकता का अभाव इस समुदाय में आम समस्याएँ हैं। कई क्षेत्रों में प्राथमिक स्वास्थ्य केंद्रों की दूरी और आर्थिक असमर्थता के कारण समय पर इलाज नहीं हो पाता। पारंपरिक बाँस शिल्प पर अत्यधिक निर्भरता और कृषि भूमि का व्यापक अभाव (भूहीनता) इस समुदाय की सबसे बड़ी सामाजिक-आर्थिक कमजोरी है। भूमिहीन होने के कारण महली परिवार अक्सर अन्य कृषक जनजातियों या स्थानीय

Copyright © IIJMR 2026, All rights reserved 

ISSN: 3108-0766 (Online)
Volume (2), Issue (2)
April - June, 2026

प्रभावशाली वर्गों पर निर्भर रहने को विवश होते हैं, जिससे समाज में इनकी सौदेबाजी की क्षमता कमजोर रहती है और सामाजिक प्रतिष्ठा भी अपेक्षाकृत निम्न मानी जाती है **(सिंह,1999)[5]।**

आधुनिकता, शहरीकरण और पलायन के प्रभाव से महली जनजाति के पारंपरिक सामाजिक मूल्यों और संरचना में स्पष्ट परिवर्तन आ रहा है। आजीविका के बेहतर अवसरों की तलाश में ग्रामीण क्षेत्रों से शहरों की ओर पलायन बढ़ा है, जिसके परिणामस्वरूप संयुक्त परिवार प्रणाली कमजोर पड़ रही है और एकल परिवारों का चलन तेजी से बढ़ रहा है। शहरी क्षेत्रों में मजदूरी करने वाले युवा अक्सर अपनी पारंपरिक सांस्कृतिक पहचान और भाषा से दूर होते जा रहे हैं **(गौतम, 2022)[6]।** इसके अतिरिक्त, कुपोषण, स्वास्थ्य जागरूकता की कमी, स्वच्छता की समस्याएँ और कुछ स्थानों पर अंधविश्वास जैसी सामाजिक चुनौतियाँ समुदाय के समग्र विकास में बाधक बनी हुई हैं। यद्यपि महली समाज में महिलाओं को आर्थिक गतिविधियों विशेषकर बाँस के सामान बनाने और बाज़ार में बेचने में पुरुषों के समान भागीदार माना जाता है, फिर भी सामाजिक निर्णय लेने की प्रक्रियाओं, संपत्ति अधिकार और सार्वजनिक मंचों पर उनकी भूमिका अभी भी सीमित है। इस प्रकार, महली जनजाति आज एक संक्रमणकालीन अवस्था में है, जहाँ पारंपरिक सामाजिक व्यवस्था आधुनिकता की चुनौतियों से जूझ रही है और समुदाय को अपनी सांस्कृतिक जड़ों को सुरक्षित रखते हुए सामाजिक-आर्थिक उत्थान का मार्ग खोजना है।

## झारखण्ड में महली जनजाति की सामाजिक स्थिति में सुधार हेतु किए जा रहे सरकारी प्रयास

झारखण्ड सरकार और केंद्र सरकार द्वारा महली जनजाति के सामाजिक और आर्थिक उत्थान के लिए विभिन्न योजनाएं और कार्यक्रम चलाए जा रहे हैं। जनजातीय कार्य मंत्रालय के माध्यम से 'अनुच्छेद 275(1)' के तहत महली बहुल क्षेत्रों में बुनियादी अवसंरचना जैसे - सड़क, पेयजल, शिक्षा और स्वास्थ्य सुविधाओं का विस्तार किया जा रहा है। इसके अतिरिक्त, महली युवाओं को पारंपरिक बाँस कला में आधुनिक कौशल प्रदान करने के लिए 'झारखण्ड माटी कला बोर्ड' तथा 'झारखण्ड राज्य बांस मिशन' के तहत प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किए जाते हैं, ताकि उनके द्वारा बनाए गए उत्पादों की गुणवत्ता और बाजार मूल्य में सुधार हो सके **(कुमार, 2022)[7]।**

महली समुदाय की शैक्षणिक स्थिति में सुधार लाने हेतु राज्य सरकार द्वारा जनजातीय आवासीय विद्यालयों (जैसे एकलव्य मॉडल आवासीय विद्यालय) में महली बच्चों के लिए आरक्षण और छात्रवृत्ति योजनाएं संचालित की जा रही हैं। साथ ही, प्राथमिक स्तर पर मातृभाषा में शिक्षा को प्रोत्साहन देने का प्रयास किया गया है **(जनजातीय कार्य मंत्रालय, 2021)[8]।** सामाजिक सुरक्षा के अंतर्गत महली समुदाय के वृद्धों, विधवाओं और दिव्यांगों को पेंशन योजनाओं से जोड़ा गया है। 'मुख्यमंत्री रोजगार सृजन योजना' और 'झारखण्ड आजीविका संवर्धन समाज' के माध्यम से महली महिलाओं को स्वयं सहायता समूहों से जोड़कर उन्हें स्वरोजगार के लिए कम ब्याज पर ऋण उपलब्ध कराया जा रहा है, जिससे उनकी सामाजिक आत्मनिर्भरता बढ़ रही है**(झारखण्ड सरकार, 2022)[9]।**

ट्राइफेड और 'वन धन विकास केंद्र' जैसी योजनाओं के माध्यम से महली कारीगरों को उनके बाँस के उत्पादों का उचित मूल्य दिलाने और उन्हें बड़े राष्ट्रीय व अंतर्राष्ट्रीय बाजारों से जोड़ने का प्रयास किया जा रहा है। सरकारी मेलों और प्रदर्शनी (जैसे आदिवासी महोत्सव) में महली शिल्पकारों को

Copyright © IIJMR 2026, All rights reserved

निःशुल्क स्टॉल आवंटित किए जाते हैं। यद्यपि ये सरकारी प्रयास कागजी और ढांचागत स्तर पर सराहनीय हैं, किंतु बिचौलियों की उपस्थिति, प्रशासनिक सुस्ती और दूरस्थ ग्रामीण क्षेत्रों तक सूचनाओं का अभाव होने के कारण इन योजनाओं का पूरा लाभ महली जनजाति के अंतिम व्यक्ति तक नहीं पहुँच पा रहा है **(जनगणना निदेशक, 2011)**[10] ।

## चुनौतियाँ:

महली जनजाति के समक्ष सबसे बड़ी चुनौती उनके पारंपरिक व्यवसाय का संकट में पड़ना है। बाँस की उपलब्धता में कमी, वनों पर कड़े नियंत्रण और बाजार में सस्ते प्लास्टिक/फाइबर उत्पादों के प्रभुत्व ने इनकी आजीविका को बुरी तरह प्रभावित किया है। दूसरी प्रमुख चुनौती शिक्षा और स्वास्थ्य का निम्न स्तर है; दूरस्थ क्षेत्रों में गुणवत्तापूर्ण विद्यालयों और प्राथमिक स्वास्थ्य केंद्रों का अभाव है। तीसरी चुनौती पलायन और सामाजिक-सांस्कृतिक पहचान का ह्रास है, जहाँ रोजगार की तलाश में बाहर गए युवा अपनी पारंपरिक कला और भाषा से कटते जा रहे हैं।

## सुझाव:

1. राज्य सरकार को महली कारीगरों के लिए बाँस की निर्बाध आपूर्ति हेतु 'बाँस बैंक' की स्थापना करनी चाहिए और उनके उत्पादों के न्यूनतम समर्थन मूल्य की व्यवस्था करनी चाहिए।
2. महली बहुल क्षेत्रों में विशेष वोकेशनल ट्रेनिंग सेंटर खोले जाएँ, जहाँ इनके पारंपरिक बाँस शिल्प को आधुनिक डिजाइन और तकनीक के साथ जोड़कर वैश्विक बाजार तक पहुँचाया जा सके।
3. शिक्षा और स्वास्थ्य सेवाओं की पहुँच सुनिश्चित करने के लिए विशेष जनजातीय विकास योजनाएँ बनाई जाएँ तथा स्वयं सहायता समूहों के माध्यम से महली महिलाओं का वित्तीय सशक्तीकरण किया जाए।

## निष्कर्ष

विश्लेषण से यह स्पष्ट होता है कि महली जनजाति झारखण्ड की एक अत्यंत महत्वपूर्ण शिल्पी जनजाति है, जिसकी समृद्ध हस्तकला और सांस्कृतिक विरासत राज्य की पहचान का अभिन्न अंग है। हालाँकि, बदलते सामाजिक-आर्थिक परिवेश में यह समुदाय गंभीर आजीविका और सामाजिक संकट का सामना कर रहा है। यद्यपि सरकारी स्तर पर कल्याणकारी योजनाएँ चलाई जा रही हैं, लेकिन उनके क्रियान्वयन में पारदर्शिता और महली समुदाय की सक्रिय भागीदारी आवश्यक है। यदि इनकी पारंपरिक बाँस कला को आधुनिक बाजार से जोड़कर आर्थिक संबल प्रदान किया जाए और शिक्षा व स्वास्थ्य की बेहतर सुविधाएँ दी जाएँ, तो महली जनजाति सामाजिक-आर्थिक रूप से सशक्त होकर राज्य के विकास में अग्रणी भूमिका निभा सकती है।

Copyright © IIJMR 2026, All rights reserved 

## सन्दर्भ सूची

1. शोभा, शोभा सिंह. "झारखंड की महली जनजातियाँ." इंटरनेशनल जर्नल ऑफ ह्यूमैनिटीज़, इंजीनियरिंग, साइंस एंड मैनेजमेंट 3.02 (2022): 25-28.
2. कुमारी, रूपम. "उपनिवेशवाद, प्रवासन और प्रतिरोध: झारखंड की आदिवासी महिलाओं की अनसुनी आवाज़ें." कल्चरल-हिस्टोरिकल एंड कंटेम्पररी पर्सपेक्टिव्स ऑन इंडियन मोबिलिटी. रूटलेज (2026): 61-77.
3. स्वरूप, स्मृति. "सन् 2000 के बाद झारखंड में जनजातीय राजनीति और सक्रियता: एक ऐतिहासिक अध्ययन." (2025).
4. बसु, सजल. "जातीय-क्षेत्रीयता और जनजातीय विकास: झारखंड में समस्याएँ और चुनौतियाँ." ट्राइबल डेवलपमेंट इन इंडिया (2006): 133-152.
5. सिंह, अमर कुमार, एट अल. "झारखंड में जनजातियों की स्थिति." सोशल चेंज 29.3-4 (1999): 59-107.
6. गौतम, नीरा, और अनामिका सिंह. "झारखंड की अनुसूचित जनजातियों का स्थानिक वितरण, जनसांख्यिकीय संरचना और शैक्षिक स्थिति के संदर्भ में एक स्थितिजन्य विश्लेषण." बीजेपीए 19.2 (2022): 101.
7. कुमार, राकेश. "झारखंड, भारत के जनजातीय लोगों में समाज और संस्कृति परिवर्तन." टूरिज्म हेरिटेज एंड कल्चर स्टडीज़ 2.1 (2022): 73-77.
8. जनजातीय कार्य मंत्रालय, भारत सरकार. वार्षिक रिपोर्ट 2020-21. नई दिल्ली, 2021.
9. झारखण्ड सरकार, कल्याण विभाग. झारखण्ड की जनजातीय सांख्यिकी और विकास सूचकांक. राँची, 2022.
10. जनगणना निदेशक, भारत की जनगणना 2011: झारखण्ड अनुसूचित जनजाति प्राथमिक जनगणना सार. गृह मंत्रालय, भारत सरकार, 2011.

*******

Copyright © IIJMR 2026, All rights reserved 